

# रसान् आथर्वणादपि

उमेश कुमार सिंह\*

[umeshvaidik@gmail.com](mailto:umeshvaidik@gmail.com)

सार

प्रायः सभी भारतीय शास्त्रों के उपजीव्य के रूप में वेदों को स्वीकार किया जाता है। आयुर्वेद ने भी अपना स्रोत वेदों को बतलाया है, जिसमें कि अथर्ववेद के प्रति अधिक भक्ति प्रकट की गई है। इसी भाँति नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरत ने भी नाट्यशास्त्र के मूल के रूप में चारों वेदों को माना है। उनका यह मानना है कि ऋग्वेद के पाठ्यों, सामवेद के गानों और यजुर्वेद के अभिनय तथा अथर्ववेद के रसों से प्रेरित होकर ही उन्होंने पञ्चमवेद के रूप में नाट्यवेद के ग्रन्थ नाट्यशास्त्र की रचना की जो कि वेदों की भाँति ही समस्त लोक का उपकारक है। अथर्ववेद के सन्दर्भ में यदि हम देखें तो यह पाते हैं कि इसमें रस के रूप में आयुर्वेदिक रसायनों का अधिक वर्णन है जो कि कालान्तर में मन को आनन्द प्रदान करने वाले रसों में परिणित हो गया इसका भौतिक पक्ष शरीर को स्वस्थ करने के लिए प्रयुक्त होता है तो वहीं आध्यात्मिक पक्ष भुक्ति-मुक्तिपूर्वक ब्रह्मप्राप्ति के लिए है। अथर्ववेद के ये रस कौन से हैं? तथा किस प्रकार ये साहित्यशास्त्र के रसों में परिणित हो गए इसे स्पष्ट करने का प्रयास प्रस्तुत पत्र में किया गया है।

**Keywords:** नाट्यशास्त्र, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार त्रेता युग में लोग दुःख, आपत्ति से पीड़ित हो रहे थे। इन्द्र की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने चारों वर्णों और विशेष रूप से शूद्रों के मनोरंजन और अलौकिक आनंद के लिए 'नाट्यवेद' नामक पाँचवें वेद का निर्माण किया। भरतमुनि को उसका प्रयोग करने का कार्य सौंपा गया। भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' की रचना की और अपने पुत्रों को पढ़ाया। नाट्यशास्त्र के शृंगार आदि विभिन्न रस हमें अथर्ववेद में भी देखने को मिलते हैं एवं अथर्ववेद का रसशास्त्र हमें आयुर्वेद में भी दृष्टिगोचर होता है इसे हम निम्नवत् स्पष्ट कर सकते हैं-

## 1. लोकवेद के रूप में अथर्ववेद और नाट्यशास्त्र

अथर्ववेद को लोकवेद के नाम से जाना जाता है। नाट्यशास्त्र को भी आचार्य भरत ने लोक के कल्याणार्थ प्रणीत किया है।<sup>1</sup> अथर्ववेद में लोककल्याण से सम्बन्धित विषयों को रखा गया है। इसमें शत्रुओं पर विजय प्राप्त

\* वरिष्ठ शोध सहायक, भारतीय अध्ययन केन्द्र, मेसाचुसेट विश्वविद्यालय, अमेरिका

<sup>1</sup> दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।

विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद्भविष्यति॥ नाट्यशास्त्र १.१.१४

करने के लिए अभीवर्त और दर्भमणियाँ बताई जाती हैं तो पति-पत्नी के मध्य अत्यन्त प्रेम बना रहे इस के लिए भी मन्त्रों का विधान किया गया है।

यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि नाट्य काव्य का एक भेद है और कमोवेश सभी काव्यशास्त्री आचार्यों ने रस को शब्दभेद से काव्य की आत्मा स्वीकार किया है। यदि रस काव्य की आत्मा है तो रस वेदों की भी आत्मा माना जा सकता है क्यों कि वेद देवकाव्य हैं। काव्यशास्त्रीय रसों में जहाँ व्यक्ति को शृंगार सबसे अधिक प्रभावित करता है, वहीं वेदों में भी हमें यह दिखलाई पड़ता है। चाहे वह घोषा के द्वारा पति प्राप्त करने की प्रार्थना हो। अथवा स्त्री वशीकरण से सम्बन्धित अथर्ववेद के मन्त्र हों। यहाँ प्रश्न यह हो सकता है कि वेदों में काम की प्राप्ति और स्त्रीवशीकरण या दाम्पत्य जीवन को मधुर बनाने के लिए वाजीकरण आदि के विधान क्यों मिलते हैं तो हम यह पाते हैं कि देवता भी परवश हैं उन्हें भी यज्ञ में भाग प्राप्त करने के लिए गृहस्थों पर निर्भर रहना पड़ता है और बिना गृहस्थ जीवन ने आश्रमव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी।<sup>2</sup> अब प्रश्न उठता है कि गार्हस्थ्यजीवन का आधार क्या है? यहाँ पर उत्तर मिलता है कि प्रेम। इस प्रेम में भी सबसे अधिक महत्वपूर्ण कौन सा प्रेम है पिता-पुत्र, गुरुशिष्य आदि के मध्य अथवा स्त्री-पुरुष के मध्य। यहाँ पर निःसन्देह उत्तर है स्त्री-पुरुष के मध्य का प्रेम सर्वोपरि है क्यों कि इसी के कारण अन्य सम्बन्धों का निर्माण होता है। यही दम्पति बनते हैं और कालान्तर में पिता-पुत्र और माता-पुत्र, गुरुशिष्य आदि सम्बन्ध तभी उत्पन्न होते हैं जब सन्तानपरम्परा आगे बढ़ती है। यदि सतयुग में ही सारे लोग शुकदेव जी जैसे हो जाते तो बाकी युगों के आने की आवश्यकता ही नहीं रहती। यह शृंगार ही काम पुरुषार्थ के रूप में अभिव्यक्त होता है, और इसी से अन्यरसों का भी उदय हो जाता है। जहाँ पर उत्कट कामना होती है वहीं पर मन के अन्यविकार भी उत्पन्न हो जाते हैं। यह काम ही था जिसके कारण सपत्नक्षयण से सम्बन्धित मन्त्रों की आवश्यकता पड़ी। धर्मविरुद्ध काम की पूर्ति ही शक्ति क्षय का कारण बनी जिसके कारण आयुर्वेद के रसायनतन्त्र का प्रणयन हुआ और शरीर क्षय को दूर करने के लिए अनेकानेक योगों का आविष्कार किया गया। राज्यप्राप्ति एवं साम्राज्यविस्तार की कामना ही युद्धों को जन्म देती है तत्पश्चात् वीर और करुण रस से सम्बन्धित दृश्य मानवजीवन में दृष्टिगोचर होने लगते हैं। काम ही शृंगार के रूप में अभिव्यक्त होता है और उस से ही अन्य सभी रसों की निष्पत्ति होती है इसलिए ऋग्वेद का नासदीय सूक्त कहता है कि-

कामस्तदग्रे समवर्तताधि, मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।

सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।

यदि यह काम न हो तो व्यक्ति में मुमुक्षुता भी उत्पन्न नहीं हो सकती क्यों कि मुमुक्षु होना भी काम का ही विशिष्ट प्रकार है। चूँकि अथर्ववेद में मनुष्य की कामनाओं की पूर्ति के लिए सबसे अधिक विषय वर्णित हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि सबसे अधिक रसात्मकता भी अथर्ववेद में ही है। इस कारण से आचार्य भरत को भी रस के ग्रहण के लिए अथर्ववेद का आश्रय लेना पड़ा।

<sup>2</sup> जैसा कि बौद्धों और जैनियों की भिक्षु और श्रमण आदि परम्पराएँ लोकबाह्य हो गईं। न केवल इनकी हानि हुई अपितु इनके द्वारा पूरे राष्ट्र की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई।

## 2. रससिद्ध कवियों की अवधारणा

भारतीय शास्त्रों में प्रसङ्गवशात् रस के कई अर्थ माने गए हैं। आयुर्वेद में जहाँ रसों को कटु, तिक्त, मधुर, कषाय आदि ६ प्रकार का माना गया वहीं रसायन तन्त्र में पारद को रस कहा गया है।<sup>3</sup> इसी पारद के माध्यम से रस-साधक को भुक्ति और मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। पारद के माध्यम से मनुष्य समस्त रोगों पर विजय प्राप्त करके आकाशचारी भी बन सकता है ऐसा रसमञ्जरीकार आचार्य शालिनाथ का मानना है।<sup>4</sup>

पारद के द्वारा निर्मित रसकूपर का प्रयोजन न केवल रोगमुक्ति अपितु भोगसामर्थ्य की प्राप्ति भी है।<sup>5</sup> मानव जीवन के चार पुरुषार्थों में धर्म, अर्थ और मोक्ष के अतिरिक्त काम को भी समान महत्त्व दिया गया है इस काम की पूर्ति विना बल सामर्थ्य या तदनु रूप योग्यता के नहीं हो सकती है। इस योग्यता को प्रदान करने में रस अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है, चाहे सांसारिक भोगों को भोगना हो या साधना हेतु सुदृढ़ शरीर या वज्रदेहत्व की आवश्यकता हो रस इसको सिद्ध करता है। यही कारण है कि आचार्य भर्तृहरि ने रससिद्ध कवियों को अजर अमर माना है।<sup>6</sup> यहाँ पर आचार्य भर्तृहरि का तात्पर्य न केवल काव्यशास्त्र के कवियों से है अपितु आयुर्वेद के रसायनतन्त्र के आचार्यों से भी है। इसके पक्ष में एक तर्क यह भी हो सकता है कि रसायनतन्त्र के साधक वैद्यों को आज भी कविराज पदवी से सम्बोधित किया जाता है।

पुनः यदि कवि शब्द पर ध्यान दिया जाय तो हम यह पाते हैं कि कवि का तात्पर्य मन्त्रद्रष्टा ऋषियों से है। इसीलिए अथर्ववेद में कहा गया है कि-

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।<sup>7</sup>

अर्थात् देवताओं का काव्य न मरता है न ही बूढ़ा होता है, ऐसे काव्य का दर्शन करो।

यहाँ पर कविकर्म को जरा तथा मृत्यु से रहित बताया गया है इसलिए जरा तथा मरण से मुक्ति का उपाय बताने वाले को भी कवि के नाम से जाना जाने लगा।

<sup>3</sup> पारदो रसधातुश् च रुद्रेता महारसः॥

रसेन्द्रश् चपलः सूतो हरयोनी रसोत्तमः। अष्टाङ्गनिघण्टु, वाहटाचार्य

<sup>4</sup> हरति सकलरोगान्मूर्च्छितो यो नराणां वितरति किल बद्धः खेचरत्वं जवेन ।

सकलसुरमुनीन्द्रैर्वन्दितं शम्भुबीजं स जयति भवसिन्धुः पारदः पारदोऽयम् ॥ रसमञ्जरी- १.५

<sup>5</sup> विन्दति वह्नेर्दीप्तिं पुष्टिं वीर्यं बलं विपुलम्।

रमयति रमणीशतकं रसकूपरस्य सेवकः सततम्॥ धातुवर्ग भावप्रकाश निघण्टु, १८९-९०

<sup>6</sup> जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।

नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥ नीतिशतक ६८

<sup>7</sup> अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति । देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥ अथर्ववेद १०.८.३२

### 3. अथर्ववेद में वर्णित रस

अथर्ववेद में हमें रसायन तन्त्र का भी सूत्ररूप में निर्देश प्राप्त होता है। आचार्य सुश्रुत के अनुसार रसायन तन्त्र का उद्देश्य आयुष्य प्राप्ति, बुद्धि एवं बल की प्राप्ति, रोगों से लड़ने की शक्ति को प्राप्त करना है।<sup>8</sup> इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति जिस किसी भी औषधि से प्राप्त हो उसे रसायन की संज्ञा दी जाती है। इनमें औषधियाँ (फल मूल, पुष्पादि वानस्पतिक) भी हो सकती है, तो वहीं पर स्वर्ण, लौह, रजत, हीरक (वज्र) मणि और धातुवर्ग के अन्य पदार्थ भी हो सकते हैं।, रत्नादि भी इसी वर्ग में रखे गए हैं। चरक संहिता के सूत्र स्थान में वर्णित पिप्पली रसायन हमें अथर्ववेद में भी रसायन के रूप में प्राप्त होती है, इसीलिए इसे विश्वभेषजी कहा गया है। अन्य वानस्पतिक औषधियों में हमारे समक्ष, जीवन्ती, सहमाना, दर्भ शतावर, जङ्गिड, अश्वत्थ और उदुम्बर आदि औषधियाँ प्रस्तुत होती हैं। जहाँ तक प्रश्न धातुवर्ग की औषधियों का उठता है अथर्ववेद में हमें धातुवर्ग के पदार्थ भी रसायन के रूप में विनियुक्त प्राप्त होते हैं।

#### 1. दाक्षायण हिरण्य

अथर्ववेद के प्रथमकाण्ड के अन्तिम सूक्त में दाक्षायण हिरण्य इसी ओर संकेत करता है, इसके गुणों को बतलाते हुए कहा गया है कि इसका उपयोगकर्ता राक्षसों और पिशाचों से तो बचा ही रहता है, साथ ही दीर्घ आयु को भी प्राप्त करता है।<sup>9</sup>

#### 2. नागभस्म

इसके पूर्व ही सोलहवें सूक्त में हमें फाइलेरिया की चिकित्सा के लिए सीसे (Lead) का उपयोग करने का सुझाव दिया गया है। अर्थात् नागभस्म फाइलेरिया के जीवाणुओं को दूर करने में सहायक है, जो कि रात के १२ बजे से २ बजे तक ही खून में आकर सक्रिय होते हैं, शेष समय सुषुप्तावस्था में पड़े रहते हैं। जैसा कि प्रथम मन्त्र में निर्दिष्ट है।<sup>10</sup>

<sup>8</sup> रसायनतन्त्रं नाम वयः स्थापनमायुर्मेधाबलकरं रोगापहरणसमर्थं च। सुश्रुतसंहिता, १.१.७.६

<sup>9</sup> नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमं ह्येतत् ।

यो विभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं, स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ अथर्ववेद १.३५.२

<sup>10</sup> येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुव्राजिमन्त्रिणः ।

अग्निस्तुरीयो यातुहा सोऽस्मभ्यमधि ब्रवत् ।

सीसायाध्याह वरुणः सीसायागिरुपावति ।

सीसं म इन्द्रः प्रायच्छत् तदङ्ग यातुचातनम् ॥वही, १.१६.१-२

### 3. आञ्जन

अथर्ववेद के चौथे काण्ड में एवं उन्नीसवें काण्ड में आञ्जन (Antimony Sulphide) के रोगनाशक गुणों को गिनाया गया है। इसके त्रैककुद और यामुन नाम दो भेद भी गिनाए गए हैं, जो कि आयुर्वेदिक निघण्टुओं में क्रमशः पार्वत और नादेय या स्रोतोऽञ्जन और सौवीराञ्जन के नाम से जाना जाता है।<sup>11</sup>

### 4. त्रिलोह

अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड में बार्हस्पत्यौदन के प्रसंग में भी हमें कृष्णायस् (लोहा ) और लोहितायस् (संभवतः स्वर्ण अथवा ताम्र) तथा त्रपु का उल्लेख मिलता है।<sup>12</sup>

### 5. स्वर्णभस्म

उन्नीसवें काण्ड के हिरण्यधारण सूक्त में तो स्वर्णभस्म की ओर संकेत करते हुए स्पष्ट रूप से कह दिया गया है कि इसको धारण करने वाला जरामृत्यु को ही प्राप्त होता है। इसीलिए हिरण्य के विशेषण के रूप में 'अग्नेः प्रजातं' का प्रयोग किया गया है। अर्थात् स्वर्ण की भस्म का स्पष्ट संकेत।<sup>13</sup> यहीं पर हमें रसायनतन्त्र का अपर नाम जरान्त्र सार्थक होता दिखलाई पड़ता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेद में हमें रसायन तन्त्र के पर्याप्त सूत्र मिलते हैं, जिनका उपबृंहण करके ही आयुर्वेद जैसी विशालकाय लक्ष्मोकात्मक ब्रह्मसंहिता का निर्माण हुआ। आवश्यकता उन मन्त्रों का पुनः मनन करने की है।

इन सन्दर्भों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि आयुर्वेद का रसायन तन्त्र अथर्ववेद से निष्पन्न है किन्तु इसके साथ ही यह रसायनदर्शन का भी प्रेरक बना। पारद को शिववीर्य मानकर उसकी रासायनिक साधना करने के लिए भी वैदिक कवि अथर्ववेद से ही प्रेरित हुए होंगे।

### 4. निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि अथर्ववेद और नाट्यशास्त्र में अन्य वेदों की अपेक्षा अधिक विषयसाम्य है। तथा अथर्ववेद के विभिन्न विषयों के माध्यम से ही नाट्यशास्त्र में रसों को अनुस्यूत करने की प्रेरणा आचार्य भरत को मिली होगी। लोकजीवन से सम्बन्धित विषय अथर्ववेद भी प्रतिपादित करता है और नाट्यशास्त्र भी लोकरञ्जन का कार्य करता है, इसीलिए अथर्ववेद लोकवेद है तो वहीं नाट्यशास्त्र को भी पञ्चमवेद की मान्यता मिली।

<sup>11</sup> अथर्ववेद ४.९.१०

<sup>12</sup> वही, ११.३.८

<sup>13</sup> अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यममृतं दध्ने अधि मर्त्येषु ।

ये एतद् वेद स इदेनमर्हति जरामृत्युर्भवति यो विभर्ति ॥ वही. १९.२६.१

## सहायकग्रन्थसूची-

१. Shastri ,Acharya Vaidya Nath (Trans.) Reprint 2003.*The Atharvaveda*(1-2), Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi-11002,.
२. आचार्य, श्रीराम शर्मा २००२, *ऋग्वेद संहिता (१-४)*, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार।
३. आचार्य, श्रीराम शर्मा *अथर्ववेद संहिता (१-२)* २००२, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार।
४. आचार्य, श्रीराम शर्मा, २००२, *यजुर्वेद संहिता*, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।
५. ईश्वरचन्द्र, (व्याख्या) 2004, *यजुर्वेद संहिता*, Parimal Publication, 22/3, Shakti Nagar, Delhi-11007.
६. कांगा, एर्वद मा० फ०, १९६२, *अवेस्ता (१-३)* वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे-९।
७. डॉ. कृष्णलाल, १९९३, *वैदिक संहिताओं में विविध विद्याएँ*, दिल्ली।
८. पण्डित,शंकर पाण्डुरंग, *अथर्ववेद संहिता सायणभाष्य (१-४)*, कृष्णदास अकादमी वाराणसी १९८९।
९. वाहटाचार्य, अष्टाङ्गनिघण्टु
१०. शर्मा, रामानन्द, २००१, *कामसूत्र*, कृष्णदास अकादमी वाराणसी।
११. शालिनाथ, रसमञ्जरी
१२. शास्त्री, रामकृष्ण, १९७७ *अथर्ववेद भाष्य* चौखम्बा ओरिन्टालिया दिल्ली।
१३. शास्त्री, विश्वनाथ द्विवेदी २००२, *भावप्रकाशनिघण्टु*, मोतीलाल बनारसीदास।
१४. सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द, सम्पा. २००३, *अथर्ववेद संहिता*, वेदज्योति प्रेस, जी-७, मॉडल टाउन, दिल्ली-९।
१५. सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द, सम्पा. २००३, *ऋग्वेद संहिता*, वेदज्योति प्रेस, जी-७, मॉडल टाउन, दिल्ली-९।
१६. सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द, सम्पा. २००३, *यजुर्वेद संहिता*, वेदज्योति प्रेस, जी-७, मॉडल टाउन, दिल्ली-९।
१७. सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश , १९८९, *प्राचीन भारत में रसायन का विकास*, पुस्तकायन २/४२४०, अंसारी रोड, नई दिल्ली।
१८. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर, *अथर्ववेद संहिता*, स्वाध्याय मण्डल पारडी (बलसाड)।
१९. सातवेलकर, श्रीपाद दामोदर, १९५७, *अथर्ववेद (सुबोध भाष्य १-४)* स्वाध्याय मण्डल पारडी(बलसाड)।
२०. सातवेलकर, श्रीपाद दामोदर, १९५७, *ऋग्वेद (सुबोध भाष्य १-४)* स्वाध्याय मण्डल पारडी , बलसाड, गुजरात।